ओ३म्

आ नो भद्रा क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासु अपरोतास उद्भिदः।

देवा नो यथा सदमिद्वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवेदिवे॥

पदार्थः- हे विद्वानों! जैसे (**नः**) हम लोगों को (**विश्वतः**) सब ओर से (**भद्रः**) कल्र्याण करने वाले (**अदब्धासः**) जो विनाश को न प्राप्त हुए (**अपरीतासः**) औरों ने जो न व्याप्त किये अर्थात् सब कामों से उत्तम (**उद्भिदः**) यज्ञ तथा बुद्धिबल (**आ**) (**यन्तु**) अच्छे प्रकार प्राप्त हों (**यथा**) जैसे (**नः**) हम लोगों की (**सदम्**) उस सभा को कि जिसमें स्थित होते हैं प्राप्त हुए (**अप्रायुवः**) जिनकी अवस्था नष्ट नहीं होती वे (**देवाः**) पृथ्वी आदि पदार्थों के समान विद्वान जन (**इत्**) ही (**दिवेदिवे**) प्रतिदिन (**वृधे**) वृद्धि के लिए (**रक्षितारः**) पालन करने वाले (**असन्**) हों, वैसा आचरण करो।

भावार्थ - सब मनुष्यों को परमेश्वर के विज्ञान और विद्वानों के संग से बहुत बुद्धियों को प्राप्त होकर सब ओर से धर्म का आचरण कर नित्य सब की रक्षा करने वाला होना चाहिए।

इस मन्त्र से हम परमात्मा से प्रार्थना कर रहे हैं कि वे हमें प्रतिदिन श्रेष्ठ कर्म करने की प्रेरणा दें तथा वृद्धि को प्राप्त करावें। यहाँ पर 'विद्वान' शब्द परमात्मा तथा आप्त पुरुषों के लिए भी आया है। हमारे जितने भी महापुरुष हुए हैं। वे अपने जीवन में अनोखे काम कर गए हैं जिन्हें साधारण लोग नहीं कर पाते हैं। मन्त्र में शब्द आया **विश्वतः भद्राः** अर्थात् सब ओर से कल्याण करने वाले परमात्मा को कल्याणकारी कहते हैं क्योंकि वे सदा कल्याण करने वाले होते है। जैसे माता पिता अपने पुत्र के कल्याण के लिए प्रयत्नशील रहते हैं, वैसे ही परमात्मा अपनी प्रजा को सुख पहुँचाने के लिए भद्र पदार्थ देते रहते हैं, जैसे कि प्रतिदिन शुद्ध वायु, सुय का प्रकाश, सेवन करने योग्य जल और बुद्धि आदि। सब दिशाओं की ओर से हमें कल्याण की प्राप्ति होती है। क्या सबको कल्याण की प्राप्ति होती है? अगर हाँ कहते हैं तो ऐसा प्रतीत होगा कि पापी ओर पुण्य आत्माओं को समान वरदान तथा वस्तु मिलती होगी। ऐसा सोचना पड़ेगा जिससे परमात्मा पर अन्याय करने का आरोप लग सकता है। और अगर नहीं कहेंगे तो परमात्मा पर पक्षपात का आरोप लग सकता है कि

किसी का कल्याण किसी का नहीं। जो विद्वान इस बात को भलीभाँति समझ सकता है न परमात्मा अन्यायकारी है और न ही पक्षपाती है। मनुष्य परमात्मा के न्याय को नहीं समझ पाता है और उन्हें कोसता रहता है। इस छोटे से दृष्टान्त से हम परमात्मा की दयालुता को समझाते हैं–

एक दिन किसी व्यक्ति को किसी अत्यावश्यक कार्य से विदेश जाना था। ट्रैफिक जाम के कारण हवाई अड्डे पर समय से नहीं पहुँच पाया जिसके कारण हवाइ जहाज छूट गया। उन्होंनें अपने भाग्य को तथा परमेश्वर को भी कोसा कि जीवनभर अच्छे काम करने का यही परिणाम होता है चलो मैं आज से उस परमात्मा की सत्ता को नहीं मानता हूँ, न ही उसके ज्ञान को। परन्तु उस अभागे को क्या पता था कि परमात्मा जो कुछ भी करता है वह अपने भक्तों की भलाई के लिए ही करता है। वे निराश होकर घर पर आ गए और टी. वी. चालू कर दिया। थोड़े समय बाद उनको एक ऐसा समाचार मिला कि जिसको सुनते तथा देखते हुए उनके पैरों तले जमीन खिसक गई। वह समाचार क्या था कि जिस हवाई जहाज से उसे जाना था, दुर्भाग्वश उसमें आग लग गई तथा जहाज पूरी तरह से नष्ट हो गया। यह था परमात्मा का खेल। वह शर्मिन्दा होकर परमात्मा से माफी माँगने लगा और उनकी सत्ता पर दृढ़ता से विश्वास करने लगा। परमात्मा को पता है कि किसको कब और क्या चाहिए? अगर हमारे जीवन में कुछ ऐसी घटना घटे हमे जानना चाहिए कि परमात्मा जो भी करता है हमारी भलाई के लिए करता है, दु:खी करने के लिए वे चाहे उस समय हमें दण्ड क्यों न दे रहें हों।

कौन कल्याण के अधिकारी होते हैं? तो मन्त्र कहता है, **अदब्धासः अपरीतासः** अर्थात् जो विनाश की ओर न बढ़ें हों और जिन्होंने ऐसे उत्तम कार्य किये हों जो औरों न किये हों उनका कल्याण होता है। जो किसी दबाव में न हों, स्वतन्त्र होकर प्रत्येक कार्य को प्रभु की आज्ञा समझकर करता है, ऐसा मनुष्य कल्याण का अधिकारी होता है।

आगे मन्त्र कहता है **उद्भिदः क्रतवः आ यन्तु** '**उद्भिद:**' का अर्थ है जो दु:खों का विनाश करता है। तथा दु:ख का विनाश यज्ञ से ही सम्भव है, और अनेकों यज्ञों तथा महायज्ञों के आयोजनों के लिए बल आवश्यक होता है। और ऐसे ही लोग जो बलपूर्ण होकर यज्ञों तथा महायज्ञों का आयोजन करते हैं, वे '**क्रतव:**' कहलाते हैं। **आ यन्तु** अर्थात् अच्छी प्रकार से प्राप्त हो। क्या प्राप्त हो? उत्तर है कल्याण प्राप्त हो।

यज्ञ करने से तथा उत्तम कार्यों को करने से मनुष्य मानवता के समाज में स्थिर रहता है जहाँ पर विद्वानगण उपदेश करते रहते है जिनका फल भी कल्याण ही होता है और ऐसे देवताओं की अवस्था कभी नष्ट नहीं होती। उनकी प्रतिष्ठा सदैव ही रहती है और मृत्यु को प्राप्त करके भी अमर रहते हैं।

मन्त्र में ईश्वर आदेश देता है कि हम प्रतिदिन उन विद्वानों का अनुसरण करें जो मानवकल्याण के लिए वेदों की रक्षा करने में प्रयत्न करते हैं।